व्यावहारिक नियमावली*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 भारत की जनजातीय रूपरेखा

1.2 भारत के मानचित्र पर जनजातीय समुदाय

1.3 मानवविज्ञान और जनजातीय अध्ययन

1.4 नृवंशविज्ञान शोध क्या है?

1.5 जनजातीय समुदायों में नृवंशविज्ञान शोध का संचालन कैसे करें

1.6 क्षेत्रकार्य और आंकड़ा संग्रह

1.7 आंकड़ों का विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन

1.8 सारांश

1.9 संदर्भ

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगेः

- भारत के मानचित्र पर जनजातीय समुदायों की स्थिति,
- नृवंशविज्ञान अध्ययन के लिए एक रूप रेखा कैसे तैयार करें,
- जनजातीय समुदायों के बीच नृवंशविज्ञान अध्ययन कैसे किया जाए,
- जनजातीय नृवंशविज्ञान कैसे लिखा जाये ।

1.0 परिचय

जनजातीय समुदायों का अध्ययन 'अन्य संस्कृतियों' के अध्ययन में मानवविज्ञानी की रुचि के साथ शुरू हुआ। मानवविज्ञान एक विषय के रूप में जनजातियों के अध्ययन के साथ उभरा। जनजाति की अवधारणा ने मानवविज्ञान में एक लंबे शैक्षणिक और बौद्धिक इतिहास का पता लगाया है। वास्तव में कई विद्वान 'जनजाति' शब्द को मानवविज्ञान के विकास के समानार्थी मानते हैं जो एक विशेष अध्ययन के विषय के रूप में है जो मुख्य रूप से 'आदिम', दूरस्थ, पृथक और छोटे पैमाने के समाजों के अध्ययन पर केंद्रित है।

मॉर्गन, सहलिन्स और गोडेलियर जैसे मानवविज्ञानी ने एक जनजाति को एक संगठित समाज के रूप में देखा जिसमें अच्छी तरह से सीमांकित सामाजिक और सांस्कृतिक सीमायें है। एक अंतर्विवाही इकाई के रूप में जनजाति की इस अवधारणा को बाद के विद्वानों ने चुनौती दी जिन्होंने विशेष रूप से दक्षिण एशिया के संदर्भ में जनजातियों के

*योगदानकर्ता : डॉ. के. अनिल कुमार, मानवविज्ञान अनुशासन, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

रूप में पहचाने जाने वाले समाजों के भीतर उपरोक्त सीमाओं में तरलता और पारगम्यता देखी।

इन भिन्नताओं के बावजूद आदिवासी लोग भारतीय आबादी का एक अभिन्न अंग हैं। उनकी अलग-थलग पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था, समाज और धार्मिक मान्यताओं का भारतीय समाज से सदियों पुराना जुड़ाव है। वास्तव में मानवविज्ञान की उत्पत्ति का पता यूरोपीय उपनिवेशवादियों, यात्रियों, खोजकर्ताओं और मिशनरियों द्वारा मूल लोगों के जीवन के तरीकों को समझने और उनका वर्णन करने के प्रयासों से लगाया जा सकता है। जंगल और पहाड़ी में रहने वाले जंगली लोगों को अन्य आबादी से अलग करने के लिए जनजाति कहा जाता था।

यह नियमावली आपको यह समझने में मदद करेगा कि जनजातीय संस्कृतियों पर नृवंशविज्ञान शोध कैसे किया जाता है और नृवंशविज्ञान कार्य शुरू करने से पहले आवश्यक और आधारभूत कार्य कैसे किए जाते हैं।

1.1 भारत की जनजातीय रूपरेखा

भारत में आदिवासी लोगों को कई नामों से जाना जाता है, जैसेः

- आदिवासी (मूल निवासी)
- अनुसूचित जनजाति
- जनजाति
- जनजाति (लोक समुदाय)
- गिरिजन (पहाड़ी निवासी)
- वनवासी (जंगल निवासी)
- वन्याजती (वन जाति)
- आदिमजाति (आदिम जाति)
- पहाड़ी जनजाति (पर्वतवासी)
- स्वदेशी लोग।

'आदिवासी' शब्द में, *आदि* का अर्थ है "सबसे पुराना समय", और *वासी* का अर्थ है "निवासी", इसलिए आदिवासी का अर्थ है 'स्वदेशी लोग' या 'मूल निवासी। भारत सरकार 1950 के संविधान आदेश में एक अनुसूची से प्राप्त संवैधानिक शब्द "अनुसूचित जनजाति" के तहत आदिवासियों को मान्यता देती है। 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों (STs) की जनसंख्या 10.45 करोड़ है। STs देश की कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत हैं (जनजातीय कार्य मंत्रालय 2020-2021)।

भारत में आदिवासी समुदाय अत्यधिक विविध और विषम हैं। बोली जाने वाली भाषाओं, जनसंख्या के आकार और आजीविका के साधन के संबंध में उनमें व्यापक विविधताएँ हैं। भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों की सूची में अपना स्थान पाने वाले समुदायों की

संख्या इस विविधता को दर्शाती है। भारत सरकार ने अपनी राष्ट्रीय जनजातीय नीति, 2006 के मसौदे में भारत में 698 अनुसूचित जनजातियों को दर्ज किया है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित व्यक्तिगत समूहों की संख्या 705 है।

भारत के संविधान का अनुच्छेद 366 (25) अनुसूचित जनजातियों को उन समुदायों के रूप में संदर्भित करता है जो संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार निर्धारित हैं। यह अनुच्छेद कहता है कि केवल वे समुदाय जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा प्रारंभिक सार्वजनिक अधिसूचना के माध्यम से या संसद के बाद के संशोधन अधिनियम के माध्यम से ऐसा घोषित किया गया है उन्हें अनुसूचित जनजाति माना जाएगा।

शब्द "अनुसूचित जनजाति" को संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में परिभाषित किया गया है, "ऐसी जनजाति या आदिवासी समुदाय या ऐसी जनजातियों, या आदिवासी समुदायों के कुछ हिस्सों, या समूहों के रूप जिन्हें अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता हैश। इस संविधान के अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजातियों के विनिर्देशों के मामले में पालन की जाने वाली प्रक्रिया को निर्धारित करता है।

किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में परिभाषित करने के लिए अपनाए जाने वाले मानदंड हैं:

- आदिम लक्षणों के संकेत
- विशिष्ट संस्कृति
- भौगोलिक अलगाव
- बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क में संकोच
- पिछड़ापन।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत अधिसूचित अनुसूचित जनजाति देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैली हुई हैं। अनुसूचित जनजाति समुदाय देश के लगभग 15% क्षेत्र पर रहते हैं, जो मैदानी और जंगलों से लेकर पहाड़ियों तक विभिन्न पारिस्थितिक और भू-जलवायु परिस्थितियों में रहते हैं। जनजातीय समूह सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास के विभिन्न चरणों में हैं।

जबकि कुछ आदिवासी समुदायों ने जीवन की मुख्य धारा को अपनाया है और अन्य ने नहीं। इन कमजोर अनुसूचित जनजातियों की संख्या 75 है जिन्हे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) के रूप में जाना जाता है। पहले आदिम जनजातीय समूहों के रूप में जाना जाता था उनकी विशेषताओं को PVTGs के संरक्षण और विकास के लिए योजना की धारा के तहत शामिल किया गया है। PVTGs के निर्धारण के लिए अपनाए गए मानदंड निम्नानुसार हैं:

- प्रौद्योगिकी का कृषि-पूर्व स्तर
- एक स्थिर या घटती जनसंख्या

- कम साक्षरता
- अर्थव्यवस्था का निर्वाह स्तर।

जनगणना के आंकड़ों के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर 2001 में 47. 1 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 59 प्रतिशत हो गई। पुरुष आदिवासिओं में साक्षरता दर 2001 में 59.2 से बढ़कर 2011 में 68.5 प्रतिशत हो गया जबकि इसी अवधि में महिलाओं की साक्षारता दर 34.8 से बढ़कर 49.4 प्रतिशत हो गयी । यहां ध्यान देने योग्य बिंदु यह है की कुल जनसँख्या की साक्षरता दर 2001 में 64.8 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 73 प्रतिशत हो गयी द्य अखिल भारतीय साक्षरता दर की तुलना में अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर में लगभग 14 प्रतिशत का अंर्त है।

1.2 भारत के मानचित्र पर जनजातीय समुदाय

जनजातीय आबादी का भौगोलिक वितरण एक समान नहीं है। हर जगह उन्होंने जीवन जीने के स्थानीय तरीकों को अपना लिया है इस प्रकार एक ही समुदाय के भीतर सांस्कृतिक अंतर काफी दिखाई देता है। भारत में जिन प्रमुख जनजातीय समूहों को अनुसूचित किया गया है उनमें निम्न शामिल हैं:

- गोंड
- संताल
- खासी
- नागा
- गारो
- मुंडा
- उरांव
- खरिया
- हो
- अंगामी
- भील
- कोल
- चेंचू
- कोंडाडोरस
- कोंडाकापुस
- टोटो

- पहाड़िया
- भूटिया

भील भारत में सबसे बड़ा आदिवासी समूह हैं इसके बाद गोंड, संथाल और मीना जनजातियाँ हैं। अनुसूचित जनजाति की आबादी का सबसे बड़ा संकेंद्रण पूर्वी, मध्य और पश्चिमी क्षेत्र में पाया जाता है:

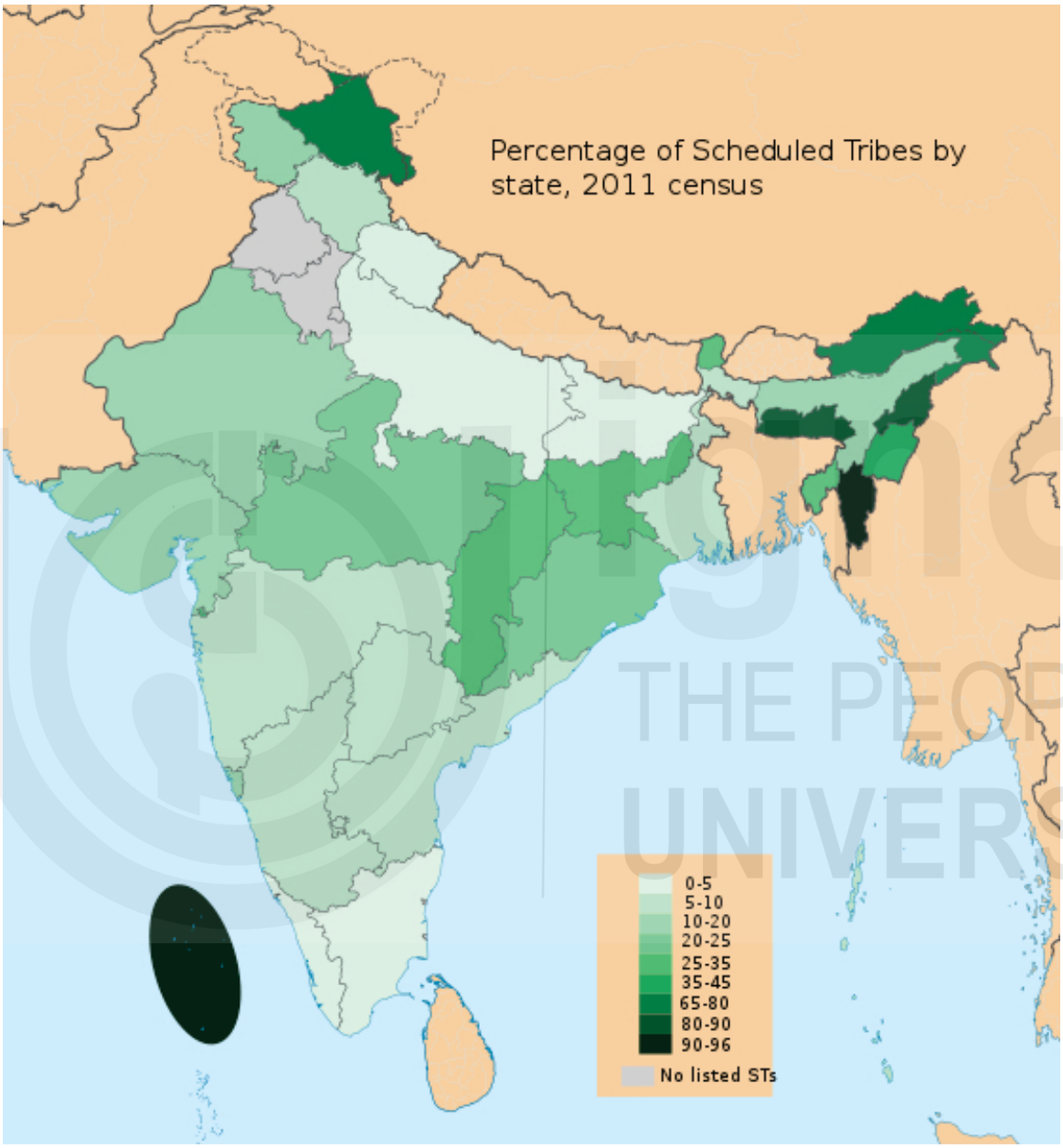

स्रोत : https://commons.wikimedia.org/wiki/File:2011_Census_Scheduled_Tribes_distribution_map_India_by_state_and_union_territory.svg

2011 की जनगणना के अनुसार, संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की आबादी में अनुसूचित जनजातियों का अनुपात निम्नलिखित है:

- लक्षद्वीप (94.8 प्रतिशत) (उच्चतम)
- मिजोरम (94.4 प्रतिशत)
- नागालैंड (89.1 प्रतिशत)

- मेघालय (85.9 प्रतिशत)।
- छत्तीसगढ़ (31.8 प्रतिशत, उच्चतम)
- झारखंड (26.3 प्रतिशत)
- ओडिशा (22.1 प्रतिशत)।

देश में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या में मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (14.5 प्रतिशत) सबसे अधिक है, इसके बाद महाराष्ट्र (10.2 प्रतिशत), उड़ीसा (9.7 प्रतिशत), गुजरात (8.9 प्रतिशत), राजस्थान (8.4 प्रतिशत), झारखंड (8.4 प्रतिशत) और छत्तीसगढ़ (7.8 प्रतिशत) का स्थान है। देश की 68 फीसदी जनआबादी इन्हीं सात राज्यों में रहती है।

अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत हिस्सा

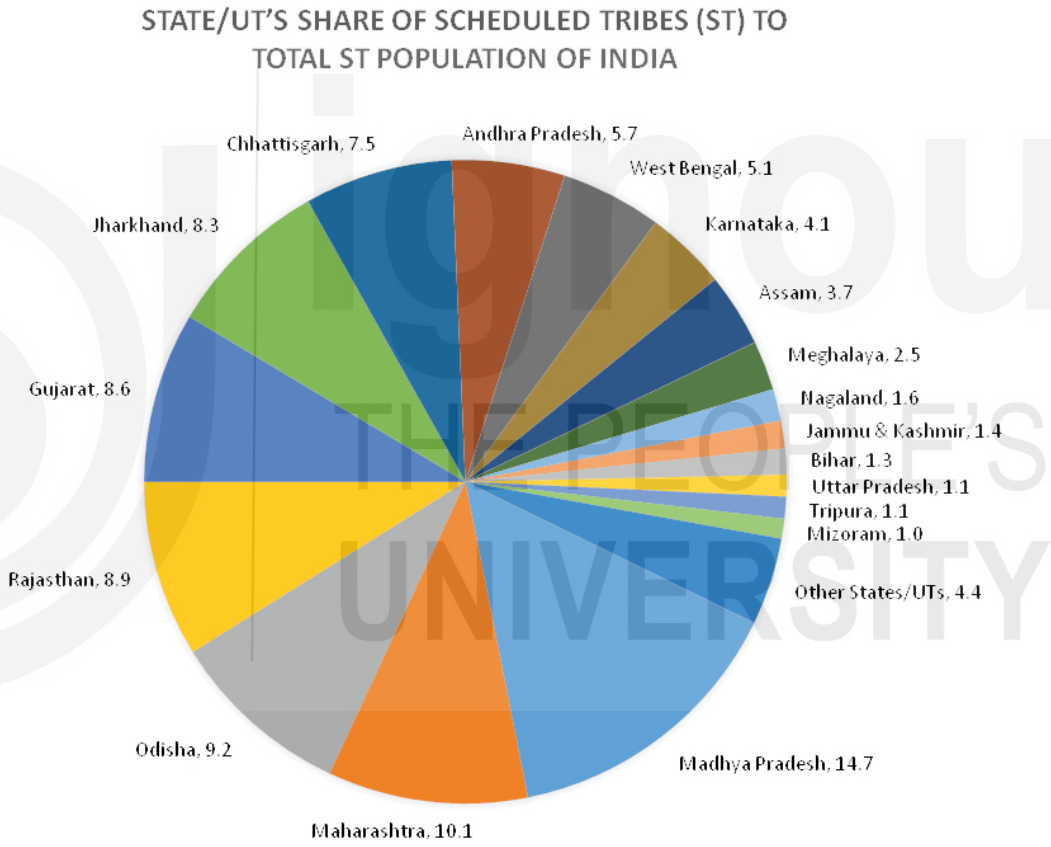

स्रोतः अनुसूचित जनजाति 2011 महापंजीयक और जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत

पंजाब, हरियाणा और दिल्ली राज्यों, और चंडीगढ़ और पुडुचेरी के केंद्र शासित प्रदेशों को छोड़कर, आदिवासी देश के सभी हिस्सों में निवास करते हैं।भारत की जनजातियों की विस्तृत सूची यहां उपलब्ध है https://web.archive.org/web/20131107225208/http://censusindia.gov.in/Tables_Published/SCST/ST%20Lists.pdf

भारत में उनकी संख्या और अन्य जनसांख्यिकीय विशेषताएं एक राज्य से दूसरे राज्य में भिन्न होती हैं। सबसे अधिक जनजातीय समुदाय (62) उड़ीसा राज्य में हैं (जनगणना 2011)। विभिन्न राज्यों की कुछ प्रमुख जनजातियाँ नीचे तालिका में दी गई हैं:

तालिका 1: भारत के विभिन्न राज्य और संघ राज्यक्षेत्र में जनजातीय लोगों का प्रतिशत

राज्य	प्रमुख जनजातियाँ	भारत/राज्य की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का %
आंध्र प्रदेश	अंध, साधु अंध, भगत, भील, चेंचुस (चेंचवार), गडबास, गोंड, गौडू, जटापुस, कम्मारा, कट्टनायकन, कोलावर, कोलम, कोंडा, मन्ना धोरा, परधान, रोना, सावरस, डब्बा येरुकुला, नक्कला, धूलिया, थोटी, सुगालिस	5.3
अरुणाचल प्रदेश	अपतानिस, अबोर, डफला, गैलोंग, मोम्बा, शेरडुकपेन, सिंगफो	68.8
असम	चकमा, चुटिया, दिमासा, हाजोंग, गारोस, खासी, गंगटे	12.4
बिहार	असुर, बैगा, बिरहोर, बिरजिया, चेरो, गोंड, परहैया, संथाल, सावर	1.3
छत्तीसगढ	अगरिया, भैना, भतरा, बियार, खोंड, मवासी, नागासिया	30.6
गोवा	ढोडिया, दूबिया, नायकदा, सिद्दी, वरली	10.2
गुजरात	बरदा, बमचा, भील, चरण, धोड़िया, गमता, पारधी, पटेलिया	14.8
हिमाचल प्रदेश	गद्दी, गुर्जर, खस, लांबा, लाहौला, पंगवाला, स्वांगला	5.7
जम्मू और कश्मीर	बकरवाल, बाल्टी, बेड़ा, गद्दी, गर्रा, सोम, पुरीग्पा, सिप्पी	11.9
झारखंड	बिरहोर, भूमिज, गोंड, खरिया, मुंडा, संथाल, सावर	26.2
कर्नाटक	अदियां, बरदा, गोंड, भील, इरुलिगा, कोरगा, पटेलिया, येरवा	7.0
केरल	अदियां, अरंडन, एरावल्लन, कुरुम्बस, मलैयारायण, मोपला, उरालिस	1.5
मध्य प्रदेश	बैगा, भील, भारिया, बिरहोर, गोंड, कातकारी, खरिया, खोंड, कोल, मुरिया	21.1
महाराष्ट्र	भैना, भुंजिया, धोड़िया, कातकरी, खोंड, राठवा, वार्ली	9.1
मणिपुर	ऐमोल, अंगामी, चिरू, कुकी, मारम, मोनसांग, पाइटे, पुरुम, थडौ	40.9
मेघालय	चकमा, गारोस, हाजोंग, जयंतिया खासी, लखेर, पवई, राबा	86.1
मिजोरम	चकमा, दिमासा, खासी, कुकी, लखेर, पवई, रबा, सिंटेंग	94.4
नागालैंड	अंगामी, गारो, कचारी, कुकी, मिकिर, नागा, सेमा, लोथा	86.5
उड़ीसा	गडबा, घरा, खरिया, खोंड, मत्या, उरांव, रजुआर, संथाल	22.8

राजस्थान	भील, दमरिया, ढांका, मीना (मिनस), पटेलिया, सहरिया	13.5
सिक्किम	भूटिया, खास, लेप्चा	33.8
तमिलनाडु	अदियां, अरनदन, एरावलन, इरुलर, कादर, कनिकर, कोटास, टोडा	1.1
तेलंगाना	गोंड, परदन, कोलम, कोया, चेंचुस	9.3
त्रिपुरा	भील, भूटिया, चैमल, चकमा, हलम, खासिया, लुशाई, मिजेल, नम्टे	31.8
उत्तराखंड	भोटिया, बुक्सा, जौनसारी, खास, राजी, थारू	2.9
उत्तर प्रदेश	भोटिया, बुक्सा, जौनसारी, कोल, राजी, थारू	0.6
पश्चिम बंगाल	असुर, खोंड, हाजोंग, हो, परहैया, राभा, संथाल, सावर	5.8
अण्डमान और निकोबार	ओरांव, ओंगेस, सेंटिनली, शोम्पेंस, जरावास और निकोबारी	7.5
दादर और नागर हवेली	ढोड़िया, दुबला, कठोडी, कोकना, कोलीधोर, नायकदा और वर्ली।	52.0
दमन और दीव	ढोड़िया, दुबला, कठोडी, कोकना, कोलीधोर, नायकदा और वर्ली	6.3
लक्षद्वीप		94.8

स्रोत : http://tribal.gov.in/writereaddata/mainlinkFile/File722.pdf
https://tribal.nic.in/ST/Statistics8518.pdf

गतिविधि

अपने आसपास के क्षेत्रों में जनजातियों की एक सूची तैयार करें ।

1.3 मानवविज्ञान और जनजातीय अध्ययन

ऐतिहासिक रूप से मानवविज्ञान का विषय जनजातीय समुदायों के अध्ययन में लगा हुआ है। प्रारंभिक वर्षों में मानवविज्ञानी मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों को समझने और समझाने में रुचि रखते थे। समय के साथ मानवविज्ञान के विषय में विविधता आई है। जनजातियों का अध्ययन करने के अलावा मानवविज्ञानी अब सामान्य रूप से गैर-जनजातियों और मानव जाति से संबंधित विभिन्न पहलुओं का भी अध्ययन करते हैं।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान ब्रिटिश सरकार ने भारत की विभिन्न जनजातियों पर आसानी से शासन करने की दृष्टि से एक नृवंशविज्ञान विवरण की आवश्यकता महसूस की। प्रारंभिक नृवंशविज्ञान का काम ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा किया गया था, लेकिन जनजातियों पर उनके विवरण ने भारत के आदिवासी इतिहास पर पर्याप्त जानकारी प्रदान की। भारतीय जनजातियों के रीति-रिवाजों और परंपराओं को दर्ज करने के लिए कई विदेशी मानवविज्ञानी भारत आए। ब्रिटिश मानवविज्ञानी डब्लू. एच. आर. रिवर्स 1904 में भारत आए और दक्षिण भारत की टोडा जनजाति का अध्ययन किया, जो 1906 में प्रकाशित हुई थी। एक अन्य मानवविज्ञानी अल्फ्रेड

रैडक्लिफ-ब्राउन 1906 और 1908 में अंडमान द्वीप समूह की *ओन्गे* जनजाति का अध्ययन करने के लिए भारत आए थे। एक मोनोग्राफ ओन्गे जनजाति पर 1922 में *द अंडमान आइलैंडर्स* शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया था। इसलिए औपनिवेशिक काल से हमारे पास जनजातियों पर शोध कार्य है जो प्रशासनिक विवरण और नृवंशविज्ञान अध्ययन से सम्बंधित हैं। अधिकांश आँकड़े क्षेत्र कार्य से एकत्र किया गया था। सामाजिक मानवविज्ञान में विद्वानों ने भारत की विभिन्न आबादी पर अपने नृवंशविज्ञान संबंधी कार्यों को प्रकाशित करना शुरू कर दिया।

इस तरह के कुछ उल्लेखनीय कार्यों में वर्ष 1891 में एच.एच. रिस्ले द्वारा प्रकाशित *ट्राइब एंड कास्ट ऑफ बंगाल* शामिल हैं। भारतीय विद्वानों में, एस.सी. रॉय को पहले भारतीय नृवंशविज्ञानी के रूप में माना जाता है जिन्होंने छोटा नागपुर क्षेत्र के उत्पीड़ित आदिवासियों की मदद की। उन्होंने छोटा नागपुर के आदिवासियों के बीच अपना कार्य शुरू किया और 1912 में अपना विशेष लेखा *मुंडा एंड देयर कंट्री* प्रकाशित किया। विदेशों से कुछ विद्वानों ने भारत में नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य किए। इन कार्यों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- पी. आर. टी. गुरदोन, *दी खासी* (1907)
- जे. पी. मिल्स द्वारा, *द ल्होटा नागा* (1922)
- जे. शेक्सपियर द्वारा, *द लुशी कुकी क्लांस* (1912)
- जी. डब्ल्यू. ब्रिग्स द्वारा, *द चमार* (1920)

मानवविज्ञानी डी. एन. मजूमदार ने भारत में आदिवासी अध्ययन में बहुत योगदान दिया। उन्होंने बिहार की *हो* जनजातियों के बीच क्षेत्रकार्य किया जिसे बाद में *द चेंजिंग हो* 1937 पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। वे भारतीय जनजातियों के जीवन पर गैर-आदिवासियों के प्रभाव के बारे में अध्ययन और लिखने वाले पहले भारतीय थे। भारतीय सामाजिक मानवविज्ञानी जैसे कि एस.सी. दुबे, बी.के. रॉय-बर्मन, माखन झा, पी.के. मिश्रा, के. एस. सिंह, टी.एन. मदन, एन.के. बोस, टी.सी. दास, इरावती कर्वे, चट्टोपाध्याय और मुखर्जी ने गाँव और सामुदायिक अध्ययनों पर बड़ी संख्या में विशेष लेख प्रकाशित किए हैं।

जे.के. बोस ने क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से गारो हिल्स में अपनी मूल बस्ती के संदर्भ में अपनी नई बस्ती में गारो के बीच हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन किया। एम. एन. श्रीनिवास ने कुर्गों के बीच नृवंशविज्ञान अध्ययन किया। उन्होंने मैसूर में विवाह और परिवार पर आंकड़ा एकत्र किया जो 1942 में प्रकाशित हुआ था। एम. एन. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक *सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया* (1966) में "संस्कृतीकरण" की अवधारणा विकसित की। सरल शब्दों में संस्कृतिकरण का अर्थ है निम्न जाति के लोग उच्च जाति (सांस्कृतिक गतिशीलता) के लोगों की नकल करते हैं जो उनकी आर्थिक या राजनीतिक स्थिति में सुधार के कारण हिंदू धर्म की महान परंपरा के स्रोत, जैसे तीर्थयात्री केंद्रों के साथ उनके संपर्क के परिणामस्वरूप होते हैं। एम.एन.श्रीनिवास ने पंजाब के रामघरिया, उत्तर प्रदेश के चमार, बिहार के उरांव, राजस्थान के भील और मध्य प्रदेश के गोंड का उदाहरण दिया और कहा कि इन सभी ने अपने जीवन के तरीके को संस्कृतिकरण करने की कोशिश की है।

मुंडा गांव के एल. पी. विद्यार्थी के अध्ययन से पता चलता है कि कैसे मुंडा जनजाति के एक वर्ग मांझी ने हिंदू जीवन शैली को अपनाया और एक जाति बन गए। उन्होंने बिहार के प्रसिद्ध

हिंदू धार्मिक तीर्थ स्थल गया में अपना अध्ययन किया। इसके परिणामस्वरूप 1961 में *द सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ हिंदू* गया नामक एक पुस्तक आई। उन्होंने विभिन्न प्रकार के लोगों और परंपराओं, जातियों और संप्रदायों, वर्गों और स्थितियों के लिए एक बैठक स्थान प्रदान करके एक एकीकृत भूमिका निभाते हुए "पवित्र संकुल" की अवधारणा प्रस्तुत की। यह अवधारणा भारत में साधारण समाजों के पारंपरिक तीर्थ स्थलों और धार्मिक परिसरों के अध्ययन के लिए मानवशास्त्रीय साहित्य में एक बहुत लोकप्रिय सैद्धांतिक प्रतिमान बन गई।

एल. पी. विद्यार्थी ने जनजातीय बिहार की सांस्कृतिक रूपरेखा (1966) पर एक पुस्तक प्रकाशित की जो छोटा नागपुर की जनजातियों की ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करती है। एल. पी. विद्यार्थी और बी के रॉय-बर्मन ने *द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया* (1976) शीर्षक के से एक पुस्तक लिखी। भारतीय स्तर पर द्वितीयक स्रोतों से आँकड़ें लेते हुए, लेखकों ने भारतीय जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन पर एक तुलनात्मक और व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया। यह पुस्तक आदिवासी भारत के संदर्भ में लोककथाओं, कला, जीवन के पाठ्यक्रम और व्यक्तित्व संरचना पर अच्छी मात्रा में जानकारी प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक भारत में आदिवासिओं के गांव, मातृवंश और बहुपतित्व के चरित्र पर प्रकाश डालती है। यह भारत की जनजातियों के बीच जनजातीय विकास और सांस्कृतिक परिवर्तन के दृष्टिकोण, योजना और कार्यक्रमों से भी संबंधित है।

सांस्कृतिक और नृवंशविज्ञान अध्ययन सामयिक जांच की एक विस्तृत श्रृंखला को सम्मिलित करते हैं। उदाहरण के लिए इस सम्बन्ध में सुरजीत सिन्हा द्वारा 1959 में प्रकाशित पुस्तक *ट्राइबल कल्चर्स ऑफ़ पेनिन्सुलर इंडिया ऐस ए डायमेंशन ऑफ़ लिटिल ट्रेडिएशन इन द स्टडी ऑफ़ इंडियन सविलिसशनः ए प्रिलिमिनरी स्टेटमेंट* है। सभ्यतागत अध्ययनों में ग्राम अध्ययन एक महत्वपूर्ण आयाम है। आपको ग्राम अध्ययनों पर ऐसे कार्य मिलेंगे जिन्होंने सामान्य रूप से जनजातीय अध्ययनों को समृद्ध किया गया है। कई सामयिक विभाजन जनजातियों की संस्कृति को प्रस्तुत करते हैं। इनमें विशेष लेखा, संकर-सांस्कृतिक अध्ययन पर कार्य, समाज और सामाजिक संस्थानों पर नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य, विश्वास और प्रथाएं आदि शामिल हैं। नृवंशविज्ञान और जनजातीय संस्कृतियों पर कुछ सामान्य कार्यों का उल्लेख नीचे किया गया है। कुछ ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञानी जो नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य के लिए भारत आए थेः

- डब्लू. एच. आर. रिवेर्सःनीलगिरि पहाड़ियों के टोडाओं पर किया गया अध्ययन,
- ए.आर. रैडक्लिफ-ब्राउनः जाने-माने संरचनात्मक प्रकार्यवादी जिन्होंने अंडमान द्वीपवासियों का अध्ययन किया,
- चार्ल्स गेब्रियल सेलिगमैन और ब्रेंडा जेड सेलिगमैनः श्रीलंका के वेदास पर लिखा था।

सामाजिक मानवविज्ञान में विद्वानों ने भारत की विभिन्न आबादी पर अपने नृवंशविज्ञान संबंधी कार्यों को प्रकाशित करना शुरू कर दिया। इस प्रकार की कुछ उल्लेखनीय कृतियों में एच. एच. रिस्ले द्वारा वर्ष 1891 में प्रकाशित *ट्राइबस एंड कास्ट ऑफ़ बंगाल* हैं।

एल.के. अनंत कृष्ण अय्यर ने *"कोचीन ट्राइब्स एंड कास्ट्स"* और *"ट्राइब एंड कास्ट ऑफ एर्नाकुलम"* पर अपना लेख प्रकाशित किया।

इस समय, कई अन्य विदेशी विद्वानों ने जनजातियों पर समस्या-उन्मुख कार्यों में योगदान दिया। उनमें से सबसे प्रमुख थे वेरियर एल्विन और क्रिस्टोफर वॉन फ्यूरर-हैमेंड्रोफ। एल्विन ने मध्य प्रदेश और उड़ीसा की जनजातियों पर शोध किया। उन्होंने निम्नलिखित पुस्तकें लिखीं:

1. *द बैगा* (1939),
2. *द अगरिया* (1943) और
3. *द मुरिया एंड देयर घोटुल* (1947)

हैमेंड्रोफ़ एक ऑस्ट्रियाई नृवंशविज्ञानी थे जिन्होंने भारत में लगभग चार दशक बिताए। उन्होंने निम्नलिखित पुस्कतें लिखीं:

1. *द चेन्चुस: जंगल फोक ऑफ़ डेक्कन* (1943)
2. *द राज गोंडस ऑफ़ आदिलाबाद: मिथ्स एंड रिचुअल* (1948)
3. *द रेड्डीज़ ऑफ़ द बाइसन हिल्स: ए स्टडी ऑफ़ एक्लचुरेशन* (1945)।

अपने अध्ययन में उन्होंने इन आदिवासी समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में विस्तार से वर्णन किया और उनकी समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया और आदिवासी विकास के लिए कल्याणकारी उपायों की सिफारिश की। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री मॉरिस ओफर, ऑस्कर लुईस और डेविड मैंडेलबाम और उनके छात्र भारतीय समाज और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए अमेरिका से भारत आए। इनमें से कई विद्वानों ने भारतीय गाँवों में अपना क्षेत्रीय कार्य किया और गाँव के अध्ययन पर अपनी परिकल्पना का परीक्षण किया। उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य अनुभव प्राप्त करने के बाद कई भारतीय और विदेशी मानवविज्ञानी ने देश के आर्थिक विकास और सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना बनाने में सरकार की मदद की। उपरोक्त पारम्परिक नृवंशविज्ञान अध्ययन भविष्य के मानवविज्ञानी के लिए प्रतिमान प्रदान करेंगे। शिक्षार्थियों को उपरोक्त नृवंशविज्ञान ज़रूर पढ़ना चाहिए।

गतिविधि

वेरियर एल्विन द्वारा अध्ययन की गई जनजातियों के नाम बताइए।

1.4 नृवंशविज्ञान शोध क्या है?

नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफी) शब्द ग्रीक शब्द *एथ्नोस* से आया है जिसका अर्थ लोग है, और *ग्रेफीन* का अर्थ लेखन है। इसीलिए नृवंशविज्ञान को "संस्कृति लेखन" के रूप में भी जाना जाता है। 1871 में संस्कृति की एक मानवशास्त्रीय परिभाषा पहली बार टाइलर द्वारा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक आदिम संस्कृति (Primitive Culture) में दी गई थी जिसमें कहा गया था, "संस्कृति वह जटिल संपूर्ण ज्ञान है जिसमें विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा, और समाज के एक सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित क्षमताएँ और आदतें शामिल है"। इस परिभाषा के माध्यम से कोई भी संस्कृति को निम्न के रूप में मान सकता है:

- संपूर्णता में जटिलता
- प्रत्येक व्यक्ति के लिए सब कुछ
- जीवन का एक तरीका।

संस्कृति भौतिक या अभौतिक हो सकती है। इसका मतलब है कि संस्कृति हर किसी के लिए अर्थ जोड़ती है और अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग अर्थ उनके समय और स्थान के अनुसार हो सकता है।

नृवंशविज्ञान के क्षेत्र में नृवंशविज्ञान शोध पर विस्तार से चर्चा की गई है जहां इसकी उत्पत्ति हुई थी। नृवंशविज्ञान के अध्ययन का भी मानवविज्ञान में अपना स्थान है एक संस्कृति को समग्र रूप से चित्रित करने में, एक विशेष समुदाय पर एक वर्णनात्मक विवरण प्रदान करने में।

नृवंशविज्ञान शोध में शोधकर्ता उस संस्कृति को समझने के उद्देश्य से निवासियों के बीच रहता है जिसे लोग साझा करते हैं। अध्ययन के तहत समुदाय की संस्कृति को समझने के लिए कभी-कभी नृवंशविज्ञान शोध को पूरा होने में वर्षों लग जाते हैं। ऐसा करने के लिए, नृवंशविज्ञानियों को निवासियों के साथ सामाजिकता और उनकी दैनिक आदतों, अनुष्ठानों, मानदंडों और कार्यों को समझने के लिए स्थानीय भाषा सीखनी होती है ।

इस प्रकार नृवंशविज्ञान शोध लोगों के एक समूह और उनके व्यवहार और अपने स्वयं के मूल वातावरण में सामाजिक अंतःक्रियाओं पर एक गुणात्मक शोध है। इस संदर्भ में लोगों का अध्ययन करना शामिल है, मुख्य रूप से कठिन आँकड़ें और संख्याओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, अवलोकन करना। नृवंशविज्ञान समय और स्थान के आयाम में एक संस्कृति का विश्लेषण और व्यवस्थित व्याख्या है।

1930 के दशक में शिकागो स्कूल के महत्वपूर्ण समाजशास्त्रियों ने नृवंशविज्ञान अध्ययन की एक नई धारा की शुरुआत की जब उन्होंने अपने स्वयं के अज्ञात स्थान का यह मान कर पता लगाना शुरू किया कि उन स्थानों को कोई नहीं जानता (डीगन, 2007)। वर्तमान में नृवंशविज्ञान शोध की क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) परिचित परिस्थिति सहित कहीं भी हो सकती हैं। नृवंशविज्ञान शोध कई प्रकार के समुदायों में हो सकता है जिसमें औपचारिक और अनौपचारिक संगठन, जैसे कार्यस्थल शहरी समुदाय, प्रशंशक क्लब, व्यापार मेला, विपणन केंद्र और सामाजिक मीडिया शामिल हैं। इसके अलावा शोध अक्सर शोधकर्ता की मूल भाषा में किया जाता है।

हालांकि नृवंशविज्ञानियों का मुख्य उद्देश्य लगभग एक ही रहता हैः यह निरीक्षण और विश्लेषण करना कि लोग अपनी संस्कृति को समझने के लिए एक दूसरे के साथ और अपने पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत/संपर्क करते हैं (पैवी एरिक्सन और ऐनी कोवलैनेन, 2008)।

नृवंशविज्ञान शोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण एक मानवविज्ञानी होगा जो एक द्वीप, या आदिवासी गांव की यात्रा कर रहा है, जो वर्षों से उक्त द्वीप या आदिवासी गांव पर समाज के भीतर रह रहा है और निरंतर अवलोकन और भागीदारी की प्रक्रिया के माध्यम से अपने लोगों और संस्कृति पर शोध कर रहा है। ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की ने ट्रोब्रिएंड द्वीप निवासियों के अपने अध्ययन में जनजाति के जादू के अनुष्ठानों को स्वीकार किया, जिसे वे तब मछली पकड़ने के दौरान इस्तेमाल करते थे जिससे उन्हें समुदाय के संपूर्ण सामाजिक और आर्थिक पहलुओं का अध्ययन करने में मदद मिली। मालिनोवस्की ने कार्यक्षेत्र की पद्धति का भी प्रस्ताव रखा जो आमतौर पर सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा आंकड़ें की पुनर्प्राप्ति है जिसका अध्ययन किया जा रहा है।

नृवंशविज्ञान कार्यक्षेत्र (एथनोग्राफीक फील्ड) के मलिनॉस्की के विचार की एक और शाखा है जो एक संस्कृति या समुदाय का लेखा-जोखा है। मालिनोवस्की ने रीति-रिवाजों के अंतर्संबंध पर भी जोर दिया और कहा कि क्षेत्र कार्य या नृवंशविज्ञान का अभ्यास करने से व्यक्ति समाज की संपूर्णता की जांच कर सकता है। मालिनोवस्की ने अपनी पुस्तक *अर्गोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पैसिफिक* में प्रतिभागी अवलोकन को कैसे ठीक से जाना जाये को गहराई से वर्णन किया जिसके वजह से मालिनोव्स्की को "क्षेत्रकार्य का जनक" माना जाता है।

रैडक्लिफ-ब्राउनफर्स्ट ने 1906 में अंडमान द्वीप समूह में अपना मानवशास्त्रीय क्षेत्रकार्य शुरू किया। 1922 में उन्होंने *द अंडमान आइलैंडर्स* नामक अपनी पहली पुस्तक प्रकाशित की। मार्गरेट मीड, शायद इतिहास में सबसे प्रसिद्ध नृवंशविज्ञानी, ने 1928 में प्रकाशित अपनी नृवंशविज्ञान कार्य *कमिंग ऑफ एज इन सामोआ* के लिए किया था।

नृवंशविज्ञानी एक विशिष्ट संस्कृति के एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य या 'मूल दृष्टिकोण' हासिल करना चाहते हैं (हैमरस्ले और एटकिंसन, 2007) । इसका मतलब है कि वे अंदर से अध्ययन के तहत संस्कृति को देखने की कोशिश करते हैं; इस अर्थ के माध्यम से कि कैसे उस संस्कृति के सदस्य रहते हैं। इसलिए नृवंशविज्ञानी शोध प्रक्रिया की शुरुआत में अनुभवजन्य आंकड़ें पर वैचारिक और सैद्धांतिक ढांचे को थोपने से बचते हैं (पैवी एरिक्सन और ऐनी कोवलैनेन, 2008) ।

गतिविधि

नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफी) को परिभाषित करें।

1.5 जनजातीय समुदायों में नृवंशविज्ञान शोध का संचालन कैसे करें

नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफीक) शोध वास्तविक दुनिया में किया जाता है। क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) वह स्थान है जहां आपका शोध जनजातीय समुदाय के बीच होता है।

शोध प्रस्ताव की तैयारी

शोध प्रस्ताव नृवंशविज्ञान शोध के संचालन के लिए पहला कदम है। शोध प्रस्ताव निम्नलिखित होना चाहिए चाहिएः

- वैचारिक ढांचे को स्पष्ट करें
- समस्या का एक संक्षिप्त विवरण शामिल करें।

इसमें निम्नलिखित शामिल होना चाहिएः

- उद्देश्य,
- परिकल्पना (यदि कोई हो),
- अध्ययन का क्षेत्र (समग्र परिवेश),
- नमूना आकार,

- आंकड़ा संग्रह के लिए प्रस्तावित उपकरण,
- आंकड़ा संग्रह प्रक्रिया,
- सारणीकरण और सांख्यिकीय गणना
- अध्यायीकरण की प्रस्तावित योजना,
- सीमाएं यदि कोई हों, और
- आगे के शोध के लिए भविष्य की दिशा।

शोध प्रस्ताव तैयार करने में शामिल निम्नलिखित कदम हैं:

- अपनी रुचि के विषय का चयन

अपनी पसंद का विषय चुनें। विषय का चुनाव अधिमानतः विषय वस्तु या विषय वस्तु की समस्या पर आधारित होना चाहिए। उदाहरण के लिए,

- ❖ भीलों की नृवंशविज्ञान रूपरेखा,
- ❖ गोंड जनजाति के भूटिया के विवाह रीति-रिवाज,
- ❖ मेघालय की खासी जनजाति में मातृवंश,
- ❖ भारत की संथाल जनजातियों का सामाजिक संगठन,
- ❖ टोडा समुदाय की खाद्य आदतें,
- ❖ नागालैंड हॉर्नबिल महोत्सव,
- ❖ भारत की जनजातियाँ और उनकी धार्मिक प्रथाएँ,
- ❖ मुंडा जनजातियों के समारोह और त्यौहार,
- ❖ कोन्याक जनजातियों का नृत्य और संगीत,
- ❖ मिज़ो की सांस्कृतिक विरासत,
- ❖ बैगा जनजातियों के लोकगीत, कला और शिल्प
- ❖ भारत की कोना रेड्डी जनजातियों के बीच संस्कृति परिवर्तन।

आम तौर पर मानवविज्ञानी अक्सर एक साहित्य समीक्षा करके शोध के लिए एक विषय ढूंढते हैं या यह जानने के लिए कि पिछले शोध में कोई अंतर मौजूद है या नहीं इस विषय के बारे में दूसरों ने पहले ही क्या लिखा है।

- परिचय/पृष्ठभूमिः इस कथन में आप स्पष्ट करते हैं कि अध्ययन में आपकी रुचि क्या है।
- शोध समस्या/परिकल्पना/शोध प्रश्न/शोध की रूपरेखा का विवरण: इस कथन में संक्षेप में समस्या का विश्लेषण और प्रासंगिकता होनी चाहिए। अध्ययन करने का यही कारण है।

- साहित्य की समीक्षाः मौजूदा साहित्य की समीक्षा की जाती है और अंतराल को सामने लाया जाता है। साहित्य समीक्षा समस्या का एक अस्थायी समाधान प्रदान करती है। यह उस सिद्धांत को भी दर्शाता है जिस पर अध्ययन आधारित होना चाहिए। साहित्य समीक्षा को दो उप-घटकों में विभाजित किया जा सकता हैः सैद्धांतिक समीक्षा और पिछले अध्ययनों की समीक्षा।

- अध्ययन के उद्देश्यः इसमें इस शोध को करने के आपके इरादे का उल्लेख होना चाहिए। आमतौर पर एक विषय में तीन से चार उद्देश्य होते हैं। इन उद्देश्यों को आपके दृष्टिकोण को इंगित करते हुए एक क्रमानुसार दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए आप "जनजातियों के समारोह और त्यौहार" का अध्ययन करना चाहते हैं। जनजातियों के संबंधित समारोहों और त्योहारों को दो समूहों में वर्गीकृत किया जाता है एक व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर और दूसरा ग्राम स्तर पर। जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार परिवार के अनुसार मनाए जाते हैं जबकि कृषि चक्र, शिकार, नए फल खाने आदि पूरे गांव के लिए मनाए जाते हैं।

- शोध पद्धतिः इसे एक शोध प्रस्ताव की रीढ़ माना जाता है। यह समस्या से निपटने की योजना है। यह एक स्पष्ट तस्वीर देता है कि शोध कैसे शुरू होगा और यह कैसे समाप्त होगा। इसलिए शोध पद्धति शोध परिणामों की गुणवत्ता निर्धारित करती है। इसे पाँच उप-घटकों में विभाजित किया गया हैः
  - अध्ययन रूपरेखा
  - आंकड़ें के स्रोत और प्रकृति
  - जनसंख्या और नमूना
  - आंकड़ा संग्रह की विधि और तकनीक
  - आंकड़ा विश्लेषण की विधि।

- अध्ययन का महत्वः इस खंड में अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से बताएं और अध्ययन के महत्व की व्याख्या करें। चर्चा करें कि अध्ययन के क्षेत्र में ज्ञान के सैद्धांतिक निकाय में अध्ययन कैसे जुड़ता है।

- संभावित अध्यायीकरणः सभी अस्थायी अध्याय के नाम और उनके बारे में कुछ विवरण शामिल करें। यह अभ्यास आपको अपने शोध प्रबंध को सुचारू रूप से और व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद करेगा।

- ग्रंथ सूची/संदर्भः एक पूर्ण ग्रंथ सूची जिसमें मुख्य पाठ में उद्धृत सभी कार्यों को शामिल किया गया है।

गतिविधि

शोध प्रस्ताव तैयार करने में शामिल चरणों की सूची बनाएं।

1.6 क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) और आंकड़ा संग्रह

क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) की तैयारी

नृवंशविज्ञान अध्ययन करने के लिए तैयारी की आवश्यकता होती है। यदि एक क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) को सफल बनाना है तो आपको इस तैयारी अवधि के दौरान कई आवश्यक मामलों पर ध्यान देना होगा।

- शोध के लिए स्थान या स्थानों को तय करें।
- उचित स्वास्थ्य सावधानी बरतें।
- घर छोड़ने से पहले सभी प्रासंगिक टीकाकरण प्राप्त करें।
- जनजातीय क्षेत्र में शोध के लिए एक अच्छी तरह से एकत्रित की गई चिकित्सा साज–सामान और बुनियादी प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण आवश्यक है।
- क्षेत्र के स्थान के आधार पर विशेष उपकरण, जैसे तंबू, गर्म कपड़े, जलरोधक कपड़े और मजबूत जूते खरीदना।
- शोध उपकरण और आपूर्ति तैयारी का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। उदाहरण के लिए कैमरा, विडियो रिकॉर्डर, टेप रिकॉर्डर और लैपटॉप कंप्यूटर अब बुनियादी क्षेत्र के उपकरण हैं जिन्हें आपको क्षेत्र में ही आंकड़ें रिकॉर्ड करने के लिए क्षेत्र में ले जाना चाहिए।
- एक क्षेत्र दैनिकी बनाए रखें और एक अलग नोटबुक में निर्दिष्ट विषय से संबंधित आंकड़ें रिकॉर्ड करें।

क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) का चयन

एक शोध क्षेत्र वह स्थान है जहां शोध होता है; कभी-कभी एक शोध में एक से अधिक क्षेत्र शामिल होता हैं। शोध स्थल अध्ययन के लिए चुनी गई समस्या पर निर्भर करता है। चुनी गई समस्या आदिवासी समुदाय के एक विशेष पहलू से संबंधित हो सकती है। शोधकर्ता यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार हैं कि प्रतिभागियों ने अध्ययन का हिस्सा बनने के लिए सहमति दी है। कभी-कभी इसके लिए हस्ताक्षरित सहमति प्रपत्रों के उपयोग की आवश्यकता हो सकती है लेकिन यह देखते हुए कि मानवशास्त्रीय शोध का अधिकांश हिस्सा संचार के अनौपचारिक तरीकों पर निर्भर करता है यह संभव नहीं हो सकता है। फिर भी यह आवश्यक है कि शोधकर्ता यह सुनिश्चित करें कि प्रतिभागी शोध को समझें और भाग लेने के लिए सहमत हों। यह सलाह दी जाती है कि यह केवल एक बार के बजाय बार-बार किया जाए। यदि आप स्थानीय भाषा से अपरिचित हैं तो पहले क्षेत्र में उनकी भाषा सीखने का प्रयास करें क्योंकि उनके साथ संवाद करना बहुत महत्वपूर्ण है।

तालमेल प्राप्त करना

क्षेत्र में कई बार प्रतिभागी शोध के लिए अपना समर्थन रोक देते हैं भाग लेने से मना कर देते हैं, या शोध प्रक्रिया में किसी भी समय अपनी सहमति वापस ले लेते हैं, और अध्ययन आबादी के साथ तालमेल बनाना शोधकर्ता का कर्तव्य है। तालमेल शोधकर्ता और अध्ययन आबादी

के बीच विश्वास का रिश्ता है। शोध के प्रारंभिक चरण में प्राथमिक लक्ष्य समुदाय में प्रमुख नेताओं या निर्णय निर्माताओं के साथ तालमेल स्थापित करना है।

आंकड़ा संग्रहण

एक बार जब शोधकर्ता चयनित शोध स्थल पर होता है तो इसका अगला चरण प्राथमिक आँकड़ा का संग्रह होता है। प्राथमिक डेटा शोधकर्ता द्वारा सीधे क्षेत्र से एकत्र की गई पहली जानकारी है। यह आपके नृवंशविज्ञान शोध का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह आपके संपूर्ण "नृवंशविज्ञान" का आधार है। आप उपयुक्त डेटा एकत्र करने वाले उपकरणों और तकनीकों और लोगों के साथ बातचीत का उपयोग करके प्राथमिक डेटा एकत्र कर सकते हैं। क्षेत्र कार्यकर्ता के पास आंकड़ा संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरणों और तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं:

- अवलोकन,
- प्रश्नावली,
- साक्षात्कार,
- प्रतिभागी अवलोकन,
- नृवंशविज्ञान मानचित्रण,
- जनगणना लेना,
- दस्तावेज़ विश्लेषण,
- वंशावली का संग्रह, और
- फोटोग्राफी (छायाचित्र)।

प्रश्नावली और साक्षात्कार मानवशास्त्रीय नृवंशविज्ञान शोध में अपनाई गई दो महत्वपूर्ण तकनीकें हैं। तकनीकों का उपयोग करते समय विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। अनुसूची साक्षात्कार या अवलोकन करने का एक उपकरण है।

प्रश्नावली को क्षेत्र में आंकड़ा संग्रह का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। अध्ययन के तहत समुदाय के सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और अन्य व्यक्तिगत जीवन पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए यह एक अच्छा साधन है। जनजातीय क्षेत्रों में प्रश्नावली का उपयोग करके आंकड़ा संग्रह असंभव हो जाता है जब उत्तरदाता अशिक्षित या कम शिक्षित होते हैं। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता को किसी अन्य युक्ति का प्रयोग कर आंकड़ा इकठ्ठा करना पड़ता है। अनुसूची एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग शोधकर्ता द्वारा सूचनादाता की उपस्थिति में आंकड़ें इकठ्ठा करने के लिए किया जाता है।

नृवंशविज्ञान पद्धति (एथनोग्राफिक मैथड) जैसा कि पहले चर्चा की गई है अनिवार्य रूप से क्षेत्र अवलोकन पर आधारित है। यह अध्ययन के तहत समुदाय के बारे में आंकड़ें प्राप्त करने के प्राथमिक तरीकों में से एक है। नृवंशविज्ञान शोध में सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली विधि में से एक अवलोकन है।

एक विधि के रूप में अवलोकन केवल देखना नहीं है; यह एक उद्देश्य के साथ प्रतिभागी का अवलोकन है। अवलोकन का कार्य सिर्फ देखना ही नहीं उससे ज़्यादा है। एक मानवविज्ञानी एक नृवंशविज्ञानी के रूप में वास्तविक जीवन परिस्थिति में व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार का निरीक्षण करता है।

नृवंशविज्ञान शोध में एक शोधकर्ता के रूप में आप अध्ययन के तहत आदिवासी समूह के दिन-प्रतिदिन के जीवन का अवलोकन कर सकते हैं या तो इसमें भाग लेकर या इसमें भाग लिए बिना । उदाहरण के लिए आप राय सभा (आदिलाबाद तेलंगाना की गोंड जनजाति की एक पारंपरिक परिषद) की कार्यवाही का अवलोकन कर सकते हैं, और कार्यवाही के दौरान आप निम्नलिखित कार्यवाही को देख सकते हैं:

- पारंपरिक परिषद की संरचना
- लोग क्या चर्चा करते हैं, कैसे चर्चा करते हैं, लोग कौन हैं
- चेहरे के भाव
- प्रयुक्त भाषा, आवाज उतार चढाव
- संचार के पद्धिति, व्यवहार
- बैठने का तरीका- क्या यह स्थिति के अनुसार है?
- प्रतिष्ठा का प्रतीक, यदि कोई हो
- लिंग आयाम।

जब शोधकर्ता नृवंशविज्ञान अध्ययन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है तो इसे प्रतिभागी अवलोकन के रूप में जाना जाता है। पूर्ण सहभागी अवलोकन में, शोधकर्ता किसी भी प्रकार की गड़बड़ी के बिना प्राकृतिक परिस्थिति को बरकरार रखने के लिए अपनी पहचान छुपाता है। नृवंशविज्ञान शोध करते समय आप कृषि गतिविधियों या अध्ययन के तहत समुदाय के त्योहारों में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।

सहभागी-अवलोकन तकनीक के उपयोग के निम्नलिखित पद्धतिगत लाभ हैं:

- यह संबंध बढ़ाता है,
- यह शोधकर्ता को वास्तविक और प्रामाणिक व्यवहार के बीच अंतर करने की अनुमति देता है।

सहभागी-अवलोकन तकनीक के उपयोग में निम्नलिखित पद्धतिगत कमियाँ हैं:

- यह समय लेने वाली है,
- यह आंकड़ें तुलनीयता की समस्या उत्पन्न करता है,
- यह आंकड़ें लेखन करने में कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है,
- यह उसी चीज़ में हस्तक्षेप कर सकता है जिसका अध्ययन किया जा रहा है।

साक्षात्कार आंकड़ें संग्रह का एक सीधा तरीका है। मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए साक्षात्कार का सार्वभौमिक रूप से उपयोग किया जाता है। साक्षात्कार का अर्थ है एक उद्देश्य

के साथ बातचीत। साक्षात्कार को विभिन्न मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। शामिल व्यक्तियों के आधार पर, व्यक्तिगत साक्षात्कार और समूह साक्षात्कार होते हैं। शामिल प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर, इसे संरचित साक्षात्कार (औपचारिक साक्षात्कार) और असंरचित साक्षात्कार (अनौपचारिक साक्षात्कार) के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

नृवंशविज्ञान साक्षात्कार जो रवैया और व्यवहार दोनों आंकड़ें एकत्र करने के लिए उपयोगी है, दो बुनियादी प्रकार के होते हैं:

- असंरचित साक्षात्कारः साक्षात्कारकर्ता खुले प्रश्न पूछते हैं और उत्तरदाताओं को अपनी गति से उत्तर देने की अनुमति देते हैं,
- संरचित साक्षात्कारः साक्षात्कारकर्ता सभी उत्तरदाताओं से समान क्रम में और समान सामाजिक परिस्थितियों में प्रश्न पूछते हैं, ।

एक साक्षात्कार का एक उद्देश्य होता हैः यह वैज्ञानिक जानकारी एकत्रित करता है। साक्षात्कारकर्ता को योजना, निश्चित दृष्टिकोण और व्यवहार की तैयारी कर लेनी चाहिए। जब शोधकर्ता अपने से भिन्न संस्कृतियों में क्षेत्र शोध करते हैं तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से लचीला होने की आवश्यकता होती है और हमेशा अप्रत्याशित की अपेक्षा करनी चाहिए।

एकअपरिचित सांस्कृतिक परिस्थिति में काम करने की कोशिश कर रहे किसी और की तरह शोधकर्ता संस्कृति के झटके के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं।

जनजातीय नृवंशविज्ञान अध्ययन के लिए रूपरेखा

a जनजाति का नाम, पहचान, मूल और इतिहास

b आदिवासी आबादी का वितरण और रुझान

c जनजातीय भौतिक विशेषताओं

d आदिवासी परिवार, कबीले और अन्य समान विभाजन

e जनजातीय आवास, पोशाक, भोजन, आभूषण, और समुदाय की विशिष्ट अन्य भौतिक वस्तुएं

f जनजातीय पर्यावरण स्वच्छता, स्वच्छ आदतें, रोग और उपचार

g जनजातीय भाषा और साहित्य

h जनजातीय आर्थिक जीवन

i जनजातीय संस्कृति का जीवन चक्र

j जनजातीय धर्म

k आराम, मनोरंजन और बच्चों का खेल

l समुदाय के विभिन्न वर्गों के बीच जनजातीय संबंध

m जनजातीय अंतर-सामुदायिक संबंध

n सामाजिक नियंत्रण, प्रतिष्ठा और नेतृत्व की जनजातीय संरचना

o जनजातीय सामाजिक सुधार और कल्याण

p संदर्भ और ग्रंथ सूची

गतिविधि

साक्षात्कार के प्रकारों के नाम लिखिए।

1.7 आँकड़ों का विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन

आँकड़ें एकत्र करने के बाद अगला महत्वपूर्ण चरण आँकड़ें का विश्लेषण करना है। आँकड़ों के विश्लेषण के विभिन्न तरीकों का उपयोग गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों से किया जाता है (हेन्सलिन और नेल्सन, 1996)।

- मात्रात्मक आँकड़ों के लिए (जो मुख्य रूप से संख्या, प्रतिशत, आकार, परिमाण को मापने के लिए दरों के रूप में व्यक्त किया जाता है) शोधकर्ता संगणक प्रतिमान का उपयोग करके परिष्कृत सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करते हैं। आँकड़ें एकत्र करने से पहले आँकड़ें विश्लेषण के लिए योजनाएं अक्सर जल्दी बनाई जाती हैं (मान, 1976)।

- गुणात्मक आंकड़ों के लिए (वर्णनात्मक बयानों के रूप में व्यक्त; जानकारी की गहराई, विवरण और संवेदनशील आयाम जो संख्याओं के संदर्भ में व्यक्त करना मुश्किल है) शोधकर्ता क्षेत्र टिपण्णी, टेप रिकॉर्डिंग और साक्षात्कार को लेखन करने का उपयोग करते हैं। टेप-रिकॉर्डिंग साक्षात्कार प्रक्रिया और प्रतिलेखन विश्लेषण के आवश्यक घटक हैं (जोन्स 1995)।

आंकड़ें का विश्लेषण करने में मानवविज्ञानी को अपने स्वयं के विचारों और अध्ययन किए जा रहे लोगों के विचारों के बीच अंतर करना चाहिए (स्कुपिन और डेकोर्स, 1995)। कई संभावित विश्लेषणात्मक योजनाओं को नियोजित किया जा सकता है। गुणात्मक आँकड़ें के विश्लेषण के लिए कुछ संगणक प्रतिमान भी उपलब्ध हैं।

नृवंशविज्ञान शोध प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक परिणाम एक लिखित दस्तावेज के रूप में प्रकट नहीं किए जाते (रोसेनो और रोसेन्थल, 1996)। शोध रिपोर्ट की सामग्री शोध के प्रकार के अनुसार भिन्न होती है। अन्य सभी विज्ञानों की तरह मानवविज्ञान में शोध रिपोर्ट लेखन, लेखन के एक निर्दिष्ट मानक तरीके का अनुसरण करता है। जिसके लिए निम्नलिखित संरचना की सिफारिश की जाती है:

- शोध का शीर्षक
- विषयसूची
- तालिका और फोटो/आंकड़ों की सूची
- आभार
- परिचय
- साहित्य की समीक्षा

- अध्ययन क्षेत्र और लोग
- सामग्री और विधियां
- आँकड़ें विश्लेषण और परिणाम (अध्यायों या अनुभागों या अनुच्छेद में प्रस्तुत किए जाने के लिए)
- चर्चा और निष्कर्ष
- संदर्भ

उपरोक्त चरणों का उपयोग करते हुए अपने आसपास के क्षेत्रों में जनजातीय संस्कृति पर एक नृवंशविज्ञान अध्ययन करने का प्रयास करें।

1.8 सारांश

विश्व के लगभग सभी भागों में जनजातीय जनसंख्या पाई जाती है। भारत दुनिया में जनजातीय आबादी का दूसरा सबसे बड़ा केंद्र है। ऐतिहासिक रूप से मानवविज्ञान का विषय जनजातीय समुदायों के नृवंशविज्ञान अध्ययन में लगा हुआ है। नृवंशविज्ञान पद्धति, अनिवार्य रूप से क्षेत्रीय कार्य पर आधारित, जनजातीय समुदायों के मानवशास्त्रीय शोध के मूल में है। नृवंशविज्ञान अध्ययन में एक शोधकर्ता को व्यवस्थित रूप से विश्वसनीय और सटीक आंकड़ें एकत्र करना होता है। मानवशास्त्रीय अध्ययन में विभिन्न प्रकार के आंकड़े एकत्र किए जाते हैं जैसे प्राथमिक आंकड़ें, द्वितीयक आंकड़ें, गुणात्मक आंकड़ें और मात्रात्मक आंकड़ें। नृवंशविज्ञान अध्ययन के दौरान एक शोधकर्ता सीधे क्षेत्र से प्राथमिक आंकड़ें एकत्र करता है। नृवंशविज्ञान अध्ययन करते समय विभिन्न तरीकों और तकनीकों का उपयोग किया जाता है जैसे अवलोकन, प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रतिभागी अवलोकन, नृवंशविज्ञान मानचित्रण, जनगणना लेना, दस्तावेज़ विश्लेषण, वंशावली का संग्रह, और छायांकन। नृवंशविज्ञान शोध के चरणों में शोध का विषय, शोध समस्या, शोध का उद्देश्य, साहित्य की समीक्षा, शोध का महत्व, अध्ययन के उद्देश्य, आंकड़ा संग्रह के तरीके, आंकड़ा विश्लेषण, आंकड़ा की व्याख्या, रिपोर्ट लेखन और संदर्भ/ग्रंथ सूची तैयार करना शामिल हैं।

1.9 संदर्भ

Concepts and Methods (2016). BA Tribal Studies Paper I Material of Rajiv Gandhi University Arunachal Pradesh, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

ErikssonP., -Kovalainen, A. (2008).Qualitative methods in business research.Sage Publication.

Henslin, J.M., -Nelson, A. (1995)Sociology: A down-to-earth approach.Canadian Edition. Scarborough, Ontario: Allyn and Bacon Canada.

https://epgp.inflibnet.ac.in/Home/ViewSubject?catid=Vu+b7LQyc9e/jifd2gmpPA==file:///C:/Users/Prof.Venket/Downloads/What%20is% 20Ethnographic%20Research_%20-%20A%20Simple%20Guide.html

Jones, R.A.(1995).Research methods in the social and behavioral sciences.Second Edition.Sunderland, Massachusetts, Sinauer Associates, Inc.

Mann, P.(1976).Methods of sociological inquiry.Oxford: Basil Blackwell.

Rosnow, R.L., -Rosenthal, R.(1996).Beginning behavioral research.A conceptualprimer.Englewood Cliffs, New Jersey: Prentice-Hall.

Scupin, R., -. DeCorse, C.R.(1995).Anthropology, a global perspective.Englewood Cliffs, New Jersey: Prentice-Hall.

नमूना प्रश्न

1. शोध प्रस्ताव तैयार करने के चरणों की विवेचना कीजिए।
2. सहभागी अवलोकन शोध में किस प्रकार सहायता करता है?
3. नृवंशविज्ञान शोध क्या है?
4. मानवशास्त्रीय शोध में उपकरणों और तकनीकों के प्रकारों की चर्चा कीजिए।
5. आंकड़ें विश्लेषण क्या है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पढ़ने के लिए सुझावित अध्ययन

Bijoy, C.R. (2001) The Adivasis of India- A History of Discrimination, Conflict, and Resistance, Indigenous Affairs, Racism, IWGIA, Copenhagen, Denmark.

Edmund Leach (1986) Tribal Ethnography: Past, Present, Future, The Cambridge Journal of Anthropology Vol. 11, No. 2 (1986), pp. 1-14.

Gandhi, Malli. 2008. Denotified Tribes: Dimensions of Change. New Delhi: Kanishka Publishers

Lalita Prasad Vidyarthi, Binay Kumar Rai (1976). The Tribal Culture of India, Concept Publishing Company.

Lalita Prasad Vidyarthi (2019) Rise of Anthropology in India, A Social Science Orientation, Volumes I and II, Concept Publishing Company.

Mibang, Tamo and M. C. Behera (ed). 2007. Tribal Studies: Emerging Frontiers of Knowledge. New Delhi: Mittal Publications.

Ministry of Tribal Affairs Government of India May (2014) Report of the High Level Committee on Socioeconomic, Health and Educational Status of Tribal Communities of India.

Sachchidanand. (1964). Culture change in Tribal Bihar: Munda and Oraon. Book land, Calcutta.Virginius Xaxa (1999) Tribes as Indigenous People of India, Economic and Political Weekly, Vol. 34, No. 51 (Dec. 18-24, 1999), pp. 3589-3595.

Walter Fernandes (2013) Tribal or Indigenous? The Indian Dilemma, The Round Table: The Commonwealth Journal of International Affairs, 102:4, 381-389, DOI.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY